जैन शैली में चित्रित शत्रुंजय तीर्थपटों का कलात्मक अध्ययन

पूनम रानी

सारांश - भारतीय चित्रकला, इतिहास व संस्कृति का दर्पण है जिसमें तत्कालीन सामाजिक गतिविधियों व भारतीय आध्यात्मिक झांकी के अद्भुत दर्शन होते हैं। भारतीय मान्यताओं व धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है, जिसके लिये मनुष्य अनेक पवित्र कृत्यों को अपनाता है। धार्मिक मान्यताओं में जप-तप, ज्ञान, योग व भक्ति के साथ-साथ तीर्थ यात्राओं को भी मोक्ष प्राप्ति का प्रमुख साधन माना है। हिन्दु हिमालयादि को, मुसलमान मक्का-मदीना को, और बौद्ध, गया व बौद्धि वृक्ष आदि स्थानों को पूज्यनीय व पवित्र मानते आ रहे हैं। इसी प्रकार जैन धर्म में भी प्रसिद्ध तीर्थ स्थल माने गये हैं जिनमें शत्रुंजय, गिरनार, आबू, तारंगगिरी और सम्मेद शिखर आदि विशेष पूजनीय हैं।

श्वेताम्बर जैन तीर्थों में शत्रुंजय तीर्थ को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, जिसके दर्शन प्रत्येक जैन मतावलम्बियों के लिये जीवन में एक बार अनिवार्य बताये गये हैं। इसी से प्रेरित होकर जैन चित्रण शैली में चित्रकारों ने पौथी चित्रों के साथ-साथ अनेक तीर्थ स्थलों को भी चित्रित किया है। जो कला जगत में तीर्थ-पटों के रूप में विख्यात हैं यह तीर्थ-पट जैन धर्म की सांस्कृतिक विरासत व भारतीय चित्रकला के सुन्दर उदाहरण हैं। इन जैन तीर्थ-पटों पर जैन तीर्थकरों, मुनियों तथा धार्मिक कथाओं से संबंधित अत्यंत आकर्षक चित्रण है जिनमें पाण्डुलिपि चित्रण से भिन्न बड़े आकार में कलात्मक चित्रण देखने को मिलता है। कई तीर्थ-पटों को बहुत विस्तृत आकार में बनाया गया है। जैन समुदाय में तीर्थपटों को निर्मित करने का विषिष्ट प्रयोजन रहा है जो उनकी धार्मिक व कलात्मक रूचि को दशाता दर्शाता है। तीर्थपटों पर चित्रित की गई आकृतियां व अलंकृत सज्जा उच्च श्रेणीं की कला की परिचायक है।

गुजरात व राजस्थान के विभिन्न कला संग्रहालओं व निजी जैन भण्डारों में बडी मात्रा में सचित्र शत्रुंजय तीर्थपट संग्रहित हैं प्रस्तुत शोध लेख में भिन्न-भिन्न आकार के चित्रसंयोजन के चार (एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद व अहमदाबाद के निजी संग्रहालयों के संग्रह में संग्रहित) शत्रुंजय

तीर्थपटों का कलात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य तीर्थपटों में जैन शैली के विकसित कला तत्वों का अवलोकन कर नवीन तथ्यों की व्याख्या करनां है ।

मुख्य शब्दावली - लोकतत्त्व, शत्रुंजय तीर्थ, नियुक्ति, चूर्णी-भाष्य, वृत्ति एवं टीका ।

शोध लेख - भारत में तीर्थों का विशेष महत्व है प्रत्येक धर्म में किसी न किसी स्थान को पूज्य व पवित्र माने जाने के उदाहरण इतिहास में प्रसिद्ध हैं। ऋग्वेद में एक स्थान पर तीर्थ शब्द का अर्थ "पवित्र स्थल" से लिया गया है। प्राचीन स्मृतियों (सूत्रों, मनु, याज्ञवलक्य) में तीर्थों का कोई महत्व नहीं बताया गया उनमें यज्ञों को अधिक महत्व दिया गया है। जबकि महाभारत एवं पुराणों में तीर्थयात्रा के महत्व का उल्लेख करते हुये उन्हें यज्ञों से भी अधिक श्रेष्ठ माना है। (प्रसाद, शिव, 1991, पृ.-63)। मतस्य पुराण में 35 कोटि तीर्थो की मान्यता है जो आकाश एवं भूमि पर स्थित हैं। ब्राहम्णीय परम्परा के समान ही जैन समुदाय में भी मुनियों द्वारा लिखित अनेक तीर्थों का विवरण हैं जिनमें तीर्थों के नाम, तीर्थों का इतिहास, तीर्थो का महत्व, मन्दिरों व प्रतिमाओं आदि का परिचय मिलता है। आगमिक व्याख्याओं- नियुक्ति, चूर्णी, भाष्य, वृत्ति एवं टीका आदि में भी तीर्थों से सम्बन्धित चर्चायें की गई हैं जिनमें सर्वाधिक प्राचीन भद्रबाहू द्वारा रचित नियुक्तियों मानी गई हैं। (मेहता, मोहनलाल, पृ.-9) सर्वप्रथम तीर्थ विषयक मान्यताओं का परिचय नियुक्तियों से ही प्राप्त हुआ है। कहीं-कहीं प्राचीन ग्रन्थों में तीर्थ के स्थान पर 'क्षेत्रमंगल' शब्द का भी प्रयोग हुआ है। (जैन, हीरालाल 1939) 14वीं शताब्दी के आस-पास जिनप्रभु सुरि द्वारा रचित ग्रन्थ "विविधतीर्थ कल्प" तथा शील विजयकृत ग्रन्थ"तीर्थमाला" जैन तीर्थों व सन्तों की जीवन झांकी प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन ग्रन्थों में मन्दिरों के निर्माण और प्रतिमाओं की स्थापना का विवरण भी मिलता है (जैन,राजेश, 1991-92, पृ.-12)"महापरिनिवार्णसूत्र" (राहुल, 1952, पृ.- 500) के अनुसार भगवान बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति, धर्मचक्रपर्वतन और निर्वाण से सम्बन्धित स्थलों को बौद्ध धर्म में पवित्र माना गया है व इनकी यात्रा करने का निर्देश दिया गया है। बौद्धों के समान जैनों में भी तीर्थंकरों के जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण आदि से सम्बन्धित स्थल तीर्थ स्थानों के रूप में प्रसिद्ध हैं।

उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि धर्म में तीर्थो का विशेष महत्व माना गया है। भारतीय धार्मिक पृष्ठभूमी में जैन धर्म भी अति प्राचीन माना गया है जिसकी प्रमुख दो शाखयें श्वेताम्बर व दिगम्बर जैन समुदायों के रूप में विख्यात हैं। जिसमें श्वेताम्बर जैन समुदाय के तीर्थों में प्राचीन काल से ही शत्रुंजय तीर्थ एक महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में प्रसिद्व है। श्वेताम्बर जैन तीर्थों में इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है। (मुनि जिनविजय,2009, पृ.-1) इसके अतिरिक्त भी जैन धर्म में अनेक तीर्थ स्थल हैं जो कि धार्मिक रूप में जैन समुदाय के लिये अत्यन्त उच्च स्थान रखतें हैं। प्रसिद्ध शत्रुंजय तीर्थपट के कलात्मक अध्ययन से पूर्व शत्रुंजय तीर्थ के भौगोलिक व सांस्कृतिक महत्व को जानना अतिआवश्यक है जिसके कारण इस तीर्थपट के चित्रण में जैन समुदाय ने विशेष रूप से चित्रकारों को इस कार्य के लिये प्रेरित किया और बडी संख्या में इसका निर्माण करवाया।

शत्रुंजय तीर्थ का भोगोलिक व सांस्कृतिक परिचय - पालीताणा से डेढ मील के फासले पर, पश्चिम की तरफ सुप्रसिद्ध शत्रुंजय नामक पर्वत है। पालीताना एक कस्बा है जिसमें कुछ राजकीय मकानों के अतिरिक्त सभी मकान जैन समुदाय के हैं। यहां अनेक धर्मशालायें, आश्रम, उपाश्रय, मन्दिर तथा विभिन्न जैन संस्थायें हैं। जिनके कारण यह स्थान बहुत ही रमणीक लगता है। जैन ग्रन्थो में इस पर्वत के 21 व 108 नाम तक मिलते हैं यह समुद् के जल से 1980 फीट ऊँचा है। (मुनि जिनविजय, 2009, पृ.-2) जिनप्रभुसूरि ने 'कल्पप्रदीप' के अन्तर्गत इसके विभिन्न नाम बताये हैं जिनमें 21 नाम प्रचलित हैं जैसे-सिद्धक्षेत्र, तीर्थराज, मरूदेव, भागीरथ, विमलांचल, बाहुबलि, स्हस्त्रकमल, तालध्वज, कदम्ब, शतपत्र, नगाधि राज, अष्टोत्तरशतकूट, सहस्त्रपत्र, ढडक, लौहित्य, कपर्दिनिवास, शत्रुंजय, मुक्तिनिलय, सिद्धिपर्वत, पुण्डरीक आदि। (प्रसाद, षिव, 1991, पृ.-252-253)

इस स्थल पर सैकडों मन्दिर हैं जिनमें लग-भग 863 संगमरमर के नक्काशीदार मंदिर हैं। "शत्रुंजयमहात्म्य" के अनुसार सर्वप्रथम भरत चक्रवर्ती ने अपने पिता श्री आदिनाथ तीर्थंकर का मंदिर यहां बनवाया था जो इस स्थान का मुख्य मंदिर है। भरत और बाहुबलि ने यहां अनेकों चैत्य और विम्बो का निर्माण कराया। नेमिनाथ को छोड़ कर अन्य सभी तीर्थंकरों के समवसरण का स्थान यही पर्वत रहा है। अनादिकाल से अनेक तीर्थंकर और श्रमणों ने इस पर्वत पर मोक्ष की प्राप्ति की है।

जिस कारण इसे अत्यन्त पवित्र स्थल माना गया है। जैन मान्यता के अनुसार इसी पर्वत पर कई सिद्धों को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई। भरत चक्रवर्ती के प्रथम पुत्र और ऋषभ देव के प्रथम गणधर पुण्डरीक स्वामी इस तीर्थ से सर्वप्रथम सिद्ध हुये। (प्रसाद, शिव, 1991, पृ.-253) हजारों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थांकर आदिनाथ द्वारा इस पहाडी की यात्रा की गई। (परिमू, रतन,2013, पृ.-69-70) विक्रमादित्य के 108 वर्ष पश्चात, जावड़ शाह द्वारा यहां एक जिनालय का निर्माण कराया गया जिसमें, ऋषभदेव, चक्रेश्वरी देवी अथवा कपर्दियक्ष की प्रतिमायें स्थापित करायीं। (प्रसाद, शिव, 1991, पृ.-253) जैन समुदाय की मान्यता है कि, प्रत्येक जैन को अपने जीवन काल में शत्रुंजय की यात्रा अवश्य करनीं चाहिये। इस पर्वत का प्राचीन इतिहास भी "शत्रुंजय महात्म्य" (धनेश्रवर नामक आचार्य द्वारा संस्कृत में रचित) ग्रन्थ में वर्णित है। अतः जैन धर्म में इस पवित्र स्थल की यात्रा मोक्ष प्रदायनी व विशेष पुन्य का कार्य मानी गयी है।

माना जाता है कि जो मनुष्य विकलांग व वृद्ध हैं और जिनके लिए शत्रुंजय तीर्थस्थल तक पहुंचना सम्भव नहीं होता था उनके लिए इस स्थल के प्रतीक स्वरूप में कलात्मक तीर्थपटों को चित्रित कराने का कार्य किया गया जिससे वह इस तीर्थपट के दर्शन से तीर्थयात्रा का फल प्राप्त कर सकें इसी उददे्श्य से वर्ष में एक बार इस तीर्थपट को जैन मन्दिरों में पूजा करने के लिये उपयुक्त स्थानों पर प्रदर्षित किया जाने लगा।

श़त्रुंजय तीर्थ-पटों का महत्व- भारतीय चित्रकला में वस्त्र चित्रकारी का प्रमुख माध्यम रहा है। जैन शैली में वस्त्र पटों पर व्यापक रूप में चित्रण किया गया है। इन वस्त्र पटों की संख्या प्रचुर मात्रा में है आज जैन शैली में निर्मित बहुसंख्यक वस्त्र-पट प्रकाश में आ चुके हैं, जिन पर जैन तीर्थकरों, मुनियों तथा धार्मिक कथाओं से संबंधित बड़े आकार में कलात्मक चित्रण देखने को मिलते हैं। श्रीधर आद्रे (2017,पृ.-67) ने अपने शोध में उल्लेख किया है कि, गुजरात व राजस्थान के धनी समुदाय ने, बीकानेर के मैथेन चित्रकारों के द्वारा जनसाधारण को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति कराने हेतु इन कलात्मक तीर्थ-पटों को तैयार करने के लिये प्रेरित किया। जिनमें शत्रुजंय तीर्थपट विशेष उल्लेखनीय है, तीर्थपटों का चित्रण पारम्परिक रूप में कई जैन मन्दिरों व पहाडियों के संयोजन से किया गया है। इस तीर्थ पट के अनेक उदाहरण विभिन्न जैन-भण्डारों व संग्रहालयों में संग्रहित हैं।

शोध अध्ययनों से ज्ञात होता है कि, 14 वीं शताब्दी से पूर्व तीर्थपटों का विवरण नहीं मिलता है। 15 वीं शती के बाद ही इन तीर्थपटों का परिचय प्राप्त हुआ है। यह तीर्थपट लघु व विस्तृत दोनों आकारों में निर्मित किये गये है। लघु तीर्थपट घर में पूजा के लिये निर्मित किये जाते थे तथा बडे तीर्थपट मन्दिरों व उपाश्रयों में दर्शन हेतु स्थापित किये गये।

जैन धर्म में पूजा स्थल पर तीर्थ पटों के स्थापन का मुख्य उददे्श्य, चैत्र की पूर्णिमा के दिन इन पटों के सामने तीर्थवंदन की प्राचीन परम्परा रही है, इस दिन तीर्थ वन्दन का विशेष पुन्य माना गया है।

तीर्थयात्रा के लिये एक और पवित्र तिथि फागुन सूद 8 जनवरी मानी गई है, यह तिथि आदिनाथ के वार्षिक प्रवास से सम्बन्धित है। इस अवधि में भी तीर्थ-पट का दर्शन, भाव माध्यम से शत्रुंजय की यात्रा के समान ही फलदायी माना गया है। इस परम्परा को पटट् जुहारवा कहा जाता है। (परिमू, रतन, 2013, पृ.-70)

शत्रुंजय तीर्थपटों का कलात्मक महत्व - यह तीर्थ-पट 19वीं शदी के मध्य में गुजरात के बडौदा, सूरत व अहमदाबाद की सामाजिक संस्कृति के विकास का परिचय कराते हैं, दुर्भाग्यवष इन पटों से इनके चित्रकारों की जानकारी प्राप्त नहीं होती है, परन्तु कुछ शिलालेखों के अनुसार यह ज्ञात होता है कि यह तीर्थ पट बीकानेर के मैथेन चित्रकारों के द्वारा चित्रित किये गये। (आन्द्रे, श्रीधर, 2017, पृ.-69) जैन चित्रकारों द्वारा शत्रुंजय तीर्थपटों की रचनां सर्वाधिक हुई है। जिनमें जैन चित्रकला के क्रमिक विकास को स्पष्ट देखा जा सकता है। पश्चिमी भारत के संग्रहालयों व निजी जैन भण्डारों में श्वेताम्बर जैन समुदाय की विभिन्न कलाकृतियों का संरक्षण किया गया है, जिसमें एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस संग्रहालय में संग्रहित शत्रुंजय तीर्थ पट, जैन चित्रकला शैली के अद्भुत उदाहरण व चित्रकार की उच्चकोटी की अभिव्यक्ति के परिचायक हैं। पश्चिमी भारत के संग्रहालयों से प्राप्त कलात्मक संयोजन में भिन्नता लिये हुये चार शत्रुंजय तीर्थ पटों का वर्णन निम्न प्रकार हैः-

एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद (ए0न0-596) के संग्रह में एक पंचतीर्थ पट संग्रहित है। (चित्र संख्याः 1) जिसका रचना काल वि0 स0 1490 (1433 ई0) है। (चंद्र, मोती, 1949, पृ.-48-51) इसका माप 30×32

से0मी0 है। कपडे पर चित्रित इस पट में जैनियों के पाँच तीर्थस्थलों का चित्रण है, इस लिये यह पंचतीर्थ पट के नाम से प्रसिद्ध है। यह शत्रुंजय पट का सर्वाधिक पुराना उदाहरण है। (आन्द्रे, श्रीधर,2017, पृ.-68) चित्र को दो खण्डों में विभाजित किया है जिसमें शीर्ष भाग में शत्रुंजय पहाडी पर चढते हुये थके हुये यात्रियों व मार्ग के अन्य दृष्यों को बहुत ही आकर्षक ढंग से चित्रित किया गया है। शीर्ष भाग के मध्य में पीले रंग की सिंह आकृति व उसके दोनों ओर केले के वृक्षों के साथ पुष्पदार वृक्षों को लहरदार पहाडियों के ऊपर चित्रित किया गया है। इस पहाडी पर अनेक मन्दिर स्थित हैं जिनका चित्रण तीर्थपटों में भी किया गया है प्रस्तुत पट-चित्र के निम्न भाग में बायीं ओर दो मन्दिर चित्रित किये गये हैं जिनमें तीर्थंकरों की प्रतिमायें दर्शायी गई हैं। मन्दिरों के साथ-साथ तीर्थ स्थल पर यात्रियों द्वारा किये गये क्रियाकलापों का भी अत्यन्त सजीव चित्रण देखने को मिलता है जिसमें विश्राम करतें हुये यात्रीजनों अथवा जैन मुनियों और श्रद्धालुओं के मध्य धर्म व्याख्यानों आदि का सुन्दर दृष्य यहां प्रस्तुत किया गया है। दायीं ओर एक जल कुण्ड का चित्रण है जिसमें जल का चित्रण टोकरीनुमा रेखाओं द्वारा दर्शाया गया है इस प्रकार का जल संयोजन जैन शैली में जल चित्रण की प्रमुख विषेषता रही है। जल चित्रण के अतिरिक्त मानव आकृतियों में भी जैन शैली की समस्त विशेषतायें जैसे-परली आंख, नुकीली नाक, नुकीली चिबुक, ऐंठी हुई हाथ-पैरों की उंगलियां आदि के साथ-साथ रूई के समान बादल तथा खिलौनों के समान पशु-पक्षियों का चित्रण किया गया है। तीर्थपट में लाल धरातल पर पीले, हरे, सफेद तथा बैंगनी रंग का प्रयोग किया गया है। इस पट में चित्रकार ने रंग विधान व आकृति संयोजन का अत्यन्त सुन्दर प्रस्तुतीकरण किया है।

एक अन्य उदाहरण अहमदाबाद के एक निजी संग्रह से प्राप्त शत्रुंजय पट का है (चित्र संख्याः 2)यह एक बडे आकार का पट है, जो बहुत पतले सूती कपडे पर चित्रित किया गया है। यह पट बहुत ही क्षतिपूर्ण अवस्था में है, इसके कोने उलझे हुये हैं तथा बाहरी प्रभावों से रंग अत्यधिक फीके पड़ चुके हैं। यह वास्तव में तीर्थयात्रा के मानचित्र का सौन्दर्यात्मक उदाहरण है। इस पट में गुलाबी, काइया हरे, और पीले रंग का प्रयोग किया गया है। पट में आस-पास के पहाडी क्षेत्र को गुलाबी रंग की चट्टानों से चित्रित किया है । चित्र को दो समलम्ब भागों में विभाजित किया गया है। बायीं ओर के भाग को केंद्र से दीवार के द्वारा दो भागों में विभक्त किया है। मुख्य मंदिर

परिसर भक्तों की हल-चल तथा छोटे-छोटे देवकुलों से घिरा हुआ है। एक अन्य आयताकार क्षेत्र में द्वार के नीचे गिरनारगढ़ का मन्दिर परसर है और दायीं ओर सम्मेद शिखर का चित्रण किया गया है। हरे रंग से नागिन के समान आगे बढते हुये रास्तों का अंकन है जिन पर अपने वाहनों में तीर्थयात्री बढते हुये दिखाई देते हैं। इस पट के निचले दाहिने कोने में देवनागरी में लिखित तीन शिलालेखों का उल्लेख श्रीधर आन्द्रे द्वारा किया गया है, मुनि श्री पुण्यविजय जी (1956, पृ.-176-180) द्वारा उल्लेख किया गया है कि शिलालेखों के बारे में जानकारी कई कोलोफोंस के माध्यम से की जा सकती है। जिसमें पाठ का विवरण, इसकी प्रतिलिपि की तिथि, दानकर्ता का नाम और लेखक का नाम आदि शामिल हैं।

वि0 स0 1849 (1792 ई0) में रचित यह शत्रुंजय पट एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद (ए0न0- 84.1) में संग्रहित है (चित्र संख्याः 3) इसका आकार 1.97×1.12 सें0 मी0 है। जिसे बीकानेर में चित्रकार मेघा द्वारा चित्रित किया गया। (परिमू, रतन, 2013, पृ.-69) प्रस्तुत पट चित्र में घने हरे-भरे वृक्ष, सर्पाकार रास्ते, संगमरमर के सुन्दर मन्दिर, जल कुण्डों व ऊची-ऊची पहाडियों आदि का मनमोहक चित्रण किया गया है। चित्रकार द्वारा संगमरमर के मन्दिरों में तीर्थंकर की प्रतिमाओं व जैन मुनियों का चित्रण तीर्थ स्थल की यथार्थवादी छवी को प्रस्तुत करता है। लाल, पीले, हरे व सफेद रंग के चटकदार संयोजन के साथ-साथ गुजराती वेश-भूषा में विभिन्न क्रिया कलापों में शामिल मानव आकृतियों का चित्रण शत्रुंजय तीर्थ के महत्व का दर्षाता है। तीर्थ-पट के चारो ओर सुन्दर हाशिये का चित्रण, पट को और भी आकर्षक बनाता है।

उमाकान्त प्रेमानन्द शाह ने अपने ग्रन्थ (1978,प्लेट-9) में एक क्षैतिज आकार के तीर्थ-पट को प्रकाशित किया है। (चित्र संख्याः 4) प्रस्तुत वस्त्रपट में श्वेत पंक्ति पर इसकी रचनां तिथि (1641 ई0) व संग्रह स्थल (आनन्दजी कल्यांणजी पेडी, अहमदाबाद) लिखित है। पट के मध्य में श्वेत वर्ण का तीर्थांकर का मन्दिर है जिस पर श्वेत ध्वजा लहरा रही है। दायीं तथा बायीं ओर दो पंक्तियों में तीर्थांकरों को पद्मासन मुद्रा में भिन्न-भिन्न खानों में अंकित किया गया है। चित्रपट के मध्य में एक शिखर का आकार अंकित किया गया है जिसमें मानव व पशुओं को हल-चल करते हुये दर्शाया गया है। सम्भवतः यह शत्रुजंय शिखर की रचना है जिसमें दायीं ओर अन्य छोटी-

छोटी पहाडियों के शीर्ष पर 6 मन्दिरों को चित्रित किया गया है। पट में लाल रंग की पृष्ठभूमि पर श्वेत, नीले व स्वर्णिम पीले रंग का प्रयोग किया गया है। इस तीर्थपट में जैन शैली के अतिरिक्त राजस्थानी व मुगल विशेषताओं का समावेश से ज्ञात होता है कि इस समयावधि में जैन शैली के स्वरूप में चित्रकार द्वारा नवीन प्रयोग किये गये जिसमें मानव आकृतियों में एकचश्म चेहरे व परली आंख का आभाव है तथा पुरूषों की वेश-भूषा में राजस्थानी धोती व मुगलयी पगडी का अंकन किया गया है। यह तीर्थ-पट, चित्र संयोजन का श्रेष्ठ उदाहरण है।

निष्कर्ष- 17 वीं शताब्दी से पूर्व लघु आकार के बनाये गये तीर्थ-पट प्राप्त हुये हैं। जिन्हें जैन मुनि, वर्षाकाल में अपने साथ रखते थे। 17 वीं शती के पश्चात अनेक बडे तीर्थपट प्रकाश में आये। 1641 ई0 में शान्तिदास द्वारा तैयार किये गये बडे पट के प्रारूप से अहमदाबाद के कई जैन संरक्षक प्रभावित हुये। जिसके परिणाम स्वरूप चित्रपटों के आकार में परिवर्तन हुआ। ज्यादातर जैन संरक्षकों ने शत्रुंजय के ऐसे तीर्थपटों का चित्रण करवाया जिनमें विशेष रूप से आकार और सौन्दर्य की गुणवक्ता संरक्षकों की रूचि पर निर्भर करती थी। इन बडे आकार के तीर्थपटों को जैन भक्त आसानी से देख कर अपनी शत्रुंजय तीर्थ यात्रा की इच्छा को पूर्ण करते हैं। जैसे-जैसे संरक्षकों की रूची बढने लगी उसके परिणामस्वरूप तीर्थपटों की मांग भी बढने लगी। जैन पीठों के विस्तृत अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि 18 वीं और 19 वीं शताब्दियों के दौरान ऐसे तीर्थ-पटों का आकार अधिक विस्तृत हो गया था। जिनमें 240.4×200.4 सेमी0 माप वाले या इससे भी अधिक माप के तीर्थपट शामिल हैं, यद्यपि यह तीर्थ-पट अच्छी स्थिति मे नहीं हैं परन्तु कला व संस्कृति के स्वरूप को व्यक्त करने में विशेष भूमिका निभाते हैं।

जैन चित्रों में विषय वैविध्य में संकीर्णता है, परन्तु अभिप्रायों की दृष्टि से यह प्रतीत होता है कि, आधुनिक कला के त्रिकोंणवादी, अमूर्तवादी, संक्षेप आलेखन विधि आदि विकसित स्वरूपों की प्रेरणां स्त्रोत यह जैन षैली ही रही है। इन चित्रों में षास्त्रीय व्याकरण की भी प्रमुखता है, जिसके मूल में ज्योतिष-शास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, मंत्रशास्त्र, तंत्रशास्त्र की ज्ञान गरिमा छिपी पडी है।

जैन चित्रों में रहस्यवादी तत्वों व प्रतीकात्मक आलेखनों का भी समावेष है।

जिनमें सत, रज, तम के गुणों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। कदली, कुम्भ, तोरण, मयूर, वृषभ, सिंह, हाथी, कलश, ध्वजा, लता, वृक्ष, मेघमाला, सर्प, शुक आदि प्रतीकात्मक आलेखन में भी यह शैली एक विशेष महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह चित्र शैली, कला चित्रों की शास्त्रीय पद्धति के अनुसार एक स्वतन्त्र विद्या है, जिसकी अपनी मर्यादा और विशिष्ट चिंतन परम्परा है।

चित्र सूची-

- चित्र संख्या-1 पंचतीर्थ पट, वि0 स0 1490 (1433 ई0) एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद
- चित्र संख्या-2 शत्रुंजय पट, वि0 स0-1899 (1842 ई0) अहमदाबाद
- चित्र संख्या-3 शत्रुंजय पट, वि0 स0 1849 (1792 ई0) एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद
- चित्र संख्या-4 विविध तीर्थ-वस्त्रपट (1641 ई0) आनन्दजी कल्यांणजी पेडी, अहमदाबाद
-

चित्र संख्या-1

चित्र संख्या-2

चित्र संख्या-3

चित्र संख्या-4

सन्दर्भ सूची-

- प्रसाद, शिव (1991) जैन तीर्थो का ऐतिहासिक अध्ययन; पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, पृ.-61,252,253
- मेहता, मोहनलाल, जैन साहित्य का वृहद्इतिहास; प्रस्तावनां, भाग-3, पृ.-9
- जैन, हीरालाल (1939) षटखण्डागम; प्रथम खण्ड, अमरावती
- जैन, राजेश (1991-92) मध्यकालीन राजस्थान में जैन धर्म; पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, पृ.- 12
- राहुल सांकृत्यायन (1952) बुद्धचर्या, महापरिनिब्बानसुत्त; सारनाथ, पृ.-500
- मुनि, जिनविजय (2009) शत्रुजयतीर्थोद्धारप्रबन्ध; श्री श्रुतज्ञान प्रसारक सभा अहमदाबाद, पृ.-1,2
- परिमू, रतन (2013) ट्रेज़र फ्रॉम द लाल भाई दलपति भाई म्यूजियम; अहमदाबाद-380009, पृ.-69,70
- आन्द्रे, श्रीधर (2017) शत्रुंजय पटाज एण्ड द मथैन पेन्टर ऑफ बीकानेर; सी.एस.एम.वी.एस., रिसर्च जर्नल, मुम्बई, पृ.-67,68
- चंद्र, मोतीः (1949) जैन मिनियेचर पेंटिग्स फ्राम वेस्टर्न इण्डिया; अहमदाबाद, पृ0-48,51
- पुण्यविजय, मुनि (1956) सुपासनाहचरियामनि हस्त-लिखित पोथी मनरागीन चित्रो, (गुजराती) तथा आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरि स्मारक ग्रन्थ; श्री महावीर जैन विद्यालय

प्रकाषन; बोम्बे, पृ. -176,180

- शाह, यू. पी. (1978) टेªजर ऑफ द जैन भण्डार; एल. डी. इन्सटीट्यूट ऑफ इन्डोलॉजी, अहमदाबाद- 380009, प्लेट-9 चित्र-वी
- श्रोत्रिय, शुकदेव (1997) भारतीय चित्रकला शोध-संचय; चित्रायन प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, पृ.-98
- पाल, प्रतापादित्य व आन्द्रे, श्रीधरः जैन आर्ट फ्राम इंडिया, लॉस एंजिल्स काउंटी म्यूजियम ऑफ आर्ट; पृ.-77
- जैन चित्रः कल्पद्रुम; पृ.- 31

❋ ❋ ❋